COPYRIGHT RESERVED

2021

Time : 3 hours

Full Marks : 80

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें ।

The figures in the margin indicate full marks.
उपांत के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं ।

Answer from both the Groups as directed.
निर्देशानुसार दोनों खण्डों से उत्तर दें ।

Group – A
खण्ड – अ

1. [A] निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दें : 1×8 = 8

(क) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रीतिकाल की समय-सीमा है :

(i) संवत् 1700 से संवत् 1900 तक

(ii) 1700 ई० से 1900 ई० तक

(Turn over)

Nova NovaDom UMR 2103907770 1021 C1 A

(ख) रीतिकाल को शृंगार काल किसने कहा ?

(i) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(ii) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद

(ग) बिहारी रीतिकाल के किस धारा के कवि हैं ?

(i) रीतिबद्ध

(ii) रीतिसिद्ध

(घ) रीतिमुक्त कवि हैं ?

(i) बिहारी

(ii) घनानंद

(ङ) 'रामचंद्रिका' के रचनाकार हैं ?

(i) केशवदास

(ii) मतिराम

(च) 'शिवा बावनी' रचना है ?

(i) भूषण

(ii) केशवदास

(छ) बिहारी के आश्रयदाता थे ?

(i) राजा कीर्तिसिंह

(ii) राजा जयसिंह

(ज) 'कविप्रिया' की विषयवस्तु है ?

(i) रस

(ii) अलंकार

[B] निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें : 4×2 = 8

(i) रीतिमुक्त कवि

(ii) रीतिबद्ध कवि

(iii) भूषण

(iv) 'रामचंद्रिका' की भाषा

Group – B

खण्ड – ब

निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दें :

2. रीतिकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए। 16

अथवा

रीतिकाल के नामकरण पर प्रकाश डालिए।

3. रीतिकाल की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 16

अथवा

केशवदास का साहित्यिक परिचय दें।

4. बिहारी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

अथवा

रीतिमुक्त कवि के रूप में घनानंद का मूल्यांकन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या करें : 2×8 = 16

(क) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परें स्याम हरित-दुति होइ॥

(ख) बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौहन हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

(ग) अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलै तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।

(घ) जिनको नित नीके निहारत हीं,
तिनको अँखियाँ अब रोवति हैं।
पल पाँवरे पाइनि चाइनि सों,
अँसुवनि की धारनि धोवति हैं॥